हिन्दी शिक्षण

(इकाई 1)

(अ) माध्यमिक स्तर पर उ०प्र० बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का समीक्षात्मक अध्ययन —

जब से माध्यमिक शिक्षा पर गम्भीरता से विचार-विमर्श शुरु हुआ तब से यह अनुभव किया जा रहा है कि माध्यमिक शिक्षा का पाठ्य क्रम संकीर्ण है, एक मार्गीय है, बालक का सर्वांगीण विकास नहीं करता है।

स्वतन्त्रता से पूर्व

शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विविध विषयों का चयन करके पाठ्यक्रम बनाया जाता है। पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा के (curriculum) का हिन्दी रूपान्तरण है। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के क्यूरेर (currere) शब्द से जुड़ी हुई है, जिसका अर्थ है - "Race-Course" (दौड़ का मैदान) इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम बालक के लिए दौड़ का मैदान है। अर्थात पाठ्यक्रम वह मार्ग है जिसपर चल कर विद्यार्थी शिक्षा द्वारा अपनी मंजिल प्राप्त करता है। पाठ्यक्रम बनाये बिना उद्देश्यपूर्ण शिक्षण सम्भव नहीं है। पाठ्यक्रम के निर्धारण में देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों का ध्यान रखना होता है। व्यक्ति समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम बनाना होता है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने पाठ्यक्रम के व्यापक अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है:—

"पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है, जो स्कूल में परम्परागत रूप से पढ़ाये जाते हैं, अपितु इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है जिनको बालक स्कूल, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वर्कशॉप तथा खेल के मैदान एवं शिक्षकों एवं छात्रों के अनगिनत, अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार स्कूल का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम बन जाता है, जो छात्रों के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है और उनके विकास में सहायता दे सकता है।"

उ०प्र० बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम —

~~हाई स्कूल~~ माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 10) के लिए सात विषय सम्मिलित हैं। इसमें लचीलापन है, इसमें विषय का चुनाव कर सकते हैं —

1. हिन्दी
2. कोई भारतीय भाषा, कोई विदेशी भाषा या शास्त्रीय भाषा (त्रिभाषा सूत्र)
3. गणित
4. विज्ञान
5. सामाजिक विज्ञान
6. कला
7. व्यावसायिक शिक्षा (Trade) तकनीकी ज्ञान

समीक्षात्मक अध्ययन —

गुण —

(1.) मनोवैज्ञानिक रूप से उपयुक्त पाठ्यक्रम है। यह बालों के लिए रोचकर एवं ग्राह्य है।

(2.) सरल पाठ्यक्रम है, क्योंकि इसे बालक की आयु एवं आवश्यकता के अनुरूप बनाया गया है।

(3.) प्रस्तुत पाठ्यक्रम उच्च कक्षाओं के विषयों से सामञ्जस्य स्थापित करने में सफल है।

(4.) एकीकृत पाठ्यक्रम है। इसमें कक्षा व विषय के बीच सामञ्जस्य, उच्च कक्षा से सम्बन्ध तथा सभी विषयों के बीच में सह-सम्बन्ध स्थापित करने में सफल है।

दोष —

प्रचलित पाठ्यक्रम में निम्नलिखित दोष हैं; —

(1-) पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान पर बल — इस पाठ्यक्रम में व्यावहारिक पक्ष पर कम बल दिया गया है। पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान के कारण बालक व्यावहारिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में असफल हो जाते हैं।

(2-) विषयों का अधिक बोझ — आवश्यकता से अधिक विषयों को स्थान दिया गया है। विषयों के बोझ से बालक दब रहे हैं। योग्यताओं के अनुरूप विषयों को छाँटा नहीं गया है।

(3-) परीक्षा केन्द्रित पाठ्यक्रम — प्रस्तुत पाठ्यक्रम का सम्भाल उद्देश्य बालक को परीक्षा के लिए तैयार करना है। अतः बालक विषय की सामग्री को रटते रहते हैं जिससे वे परीक्षा में पास हो जायें। उन्हें किसी विषय का वास्तविक ज्ञान नहीं हो पाता।

(4-) नैतिक शिक्षा की कमी — प्रचलित पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है, इसी कारण दिन पर दिन अपराध बढ़ते जा रहे हैं। बालकों में सहनशीलता का अभाव चरम-सीमा पर है।

(5-) बालकों का शैक्षिक एवं आर्थिक शोषण — सरकार द्वारा ऐसे-ऐसे विद्यालयों को मान्यता दी गयी है जहाँ पर कोई मानक सुविधा नहीं है। इसमें बच्चों का केवल शैक्षिक शोषण होता है।

(6-) योग्य शिक्षकों का अभाव — योग्य शिक्षकों के अभाव वश विद्यालयों में पढ़ाई की खानापूर्ति हो जाती है। बच्चे ट्यूशन पर आधारित हो जाते हैं।

सुझाव — अतः समय व परिस्थिति के अनुसार प्रचलित पाठ्यक्रम में परिवर्तन अपेक्षित है। जैसे —

(1-) पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए।

(2-) प्राथमिक स्तर तक के बालकों का पाठ्यक्रम

बाल - केन्द्रित होना चाहिए।

(3-) पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके।

(4-) पाठ्यक्रम के विषय ~~अलग~~ अलग - अलग न होकर एक दूसरे से सम्बन्धित होने चाहिए।

(5-) पाठ्यक्रम व्यावसायिक शिक्षा पर आधारित होना चाहिए जिससे बालकों के जीविकोपार्जन की समस्या का समाधान हो सके।